रमेश पोखरियाल 'निशंक'
25/12/2019

दैनिक ट्रिब्यून
आपकी आवाज

एकता के सूत्र में आबद्ध करती संस्कृत

केंद्रीय संस्कृत विवि विधेयक
रमेश निशंक पोखरियाल

बहुत कम बार ऐसा होता है कि किसी बिल पर सबका समर्थन मिले और संसद में बिल पारित होने पर बधाई देने वालों में विपक्षी भी शामिल हों। हाल ही में प्रधानमंत्री के नेतृत्व में तीन मानद विश्वविद्यालयों को केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय बनाने सम्बन्धी बिल को लोकसभा में प्रस्तुत किया गया तो सभी सदस्यों ने बिल का समर्थन किया। ये सभी विश्वविद्यालय केन्द्रीय विश्वविद्यालय बनने पर अपने संसाधनों को अधिक विकासशील एवं विश्वस्तरीय बनाने में सक्षम होंगे।

मानना है कि भारत के चिंतन, अध्यात्म, दर्शन, मूल्यों की अभिव्यक्ति का साक्षात दर्शन करना हो तो वह संस्कृत भाषा से किया जा सकता है। दुर्भाग्य से कुछ स्वार्थी तत्व संस्कृत को किसी संप्रदाय या पंथ से जोड़ने की कुचेष्टा करते हैं। इन लोगों को जवाब देते हुए पूर्व राष्ट्रपति फखरुद्दीन अली अहमद ने कहा था कि संस्कृत किसी संप्रदाय या पंथ की भाषा नहीं है। यह हर भारतीय की भाषा है। यह भारत की आत्मा है। संस्कृत के महत्व को रेखांकित करते हुए देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने कहा था कि हमारी पूरी संस्कृति, साहित्य और जीवन तब तक अधूरा रहेगा जब तक हमारे विद्वान, हमारे विचारक और हमारे शिक्षाविद् संस्कृत से अनभिज्ञ रहेंगे।

संपूर्ण दुनिया में वसुधैव कुटुंबकम का महान विचार लेकर भारत ने सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयारू की परिकल्पना को स्वीकार करते हुए संपूर्ण मानवता के कल्याण की प्रार्थना की है। हमारा चिंतन, हमारे दर्शन और हमारे मूल्यों में एक ही भावना परिलक्षित होती है कि संसार में कोई कष्ट में न रहे। और यह हमारा सौभाग्य है कि भारत के चिंतन, दर्शन, मूल्यों की अभिव्यक्ति की भाषा संस्कृत थी।

संस्कृत भाषा जहां एक ओर विश्व की सबसे वैज्ञानिक भाषा है, वहीं विश्व का सबसे बड़ा और विविधतापूर्ण शब्दकोष है। यह भाषा सालों से हमारे समाज को समृद्ध बना रही है। संस्कृत भाषा भारतीय संस्कृति की विरासत का प्रतीक है। यह ऐसी कुंजी है जो हमारे प्राचीन ग्रंथों और हमारी धार्मिक–सांस्कृतिक परंपराओं के असंख्य रहस्यों को जानने में मदद करती है। हाल के अध्ययनों में यह पाया गया है कि संस्कृत हमारे कंप्यूटर प्रोग्रामिंग के लिए सबसे अच्छा विकल्प है।

ऐतिहासिक प्रमाणों के आधार पर ईशा पूर्व की शताब्दियों से ही भारत अपने ज्ञान के प्रमुख केन्द्रों नालंदा, तक्षशिला, विक्रमशिला, वल्लभी, काशी आदि के कारण विश्व–विश्रुत रहा है जहां देश के कोने–कोने से ही नहीं अपितु विश्व के अनेक देशों से ज्ञानार्जन हेतु विद्यार्थी आते थे। किन्तु दुर्भाग्य से इन केन्द्रों के नष्ट किये जाने के बाद यह ज्ञान परम्परा छोटे–छोटे गुरुकुलों के माध्यम से जैसे तैसे सुरक्षित रही। संस्कृत आयोग (1956–57) के सुझावों के अनुसार संस्कृत भाषा एवं उसकी ज्ञान सम्पदा के संरक्षण हेतु अभी बहुत कार्य करना शेष है। यह कार्य प्राथमिक विद्यालय, माध्यमिक विद्यालय, उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय स्तर पर किया जाना है।

विश्व के 250 विश्वविद्यालयों में संस्कृत शिक्षण किया जाता है। भारतीय संस्कृति की जड़ें इतनी गहरी हैं कि दुनिया की तमाम भाषाओं का मूलाधार संस्कृत मानी जाती रही है। हॉवर्ड यूनिवर्सिटी, कोलंबिया, यूनिवर्सिटी, शिकागो यूनिवर्सिटी, इंडियाना यूनिवर्सिटी, यूनिवर्सिटी ऑफ सिडनी, कैंब्रिज यूनिवर्सिटी, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी जैसे सर्वोत्कृष्ट संस्थानों में संस्कृत की पढ़ाई होती है। संस्कृत का महत्व बताते हुए जर्मन विद्वान प्रो. एफ. मैक्समूलर ने कहा था कि आप भारत में हर जगह अपने

श्रेष्ठ भूत एवं श्रेष्ठ भविष्य को पूरी संभावनाओं के साथ देख सकते हैं। यदि आप चाहें तो प्राचीन युग की विशेषताओं को प्राप्त कर सकते हैं।

आज देशभर में विद्यालयी स्तर पर लगभग 5000 पारम्परिक संस्कृत पाठशालाएं, 1000 वेद पाठशालाएं हैं। लगभग तीन लाख बच्चे संस्कृत का अध्ययन करते हैं। 15 संस्कृत विश्वविद्यालय हैं। इनसे लगभग 1000 पारम्परिक महाविद्यालय हैं, लेकिन काफी कुछ किये जाने की आवश्यकता है। आज आवश्यकता है कि हम नवाचार के साथ संस्कृत के शोध अनुसंधान को आगे बढ़ायें। सभी सम्बन्धित विषयों के अध्ययन–अध्यापन एवं अनुसंधान की दिशा में पूर्ण स्वायत्तता के साथ कार्य करें तभी हम भारतीय संस्कृति की ज्ञान परम्परा में निहित विज्ञानपरक उपलब्धियों का सफलतापूर्वक नियोजन कर नवभारत निर्माण की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं।